

Q. How do you know that what you are saying is true?

Reply: Why do you ask me that question? Isn't it true that as long as there is national division, economic division, racial division, religious division, there must be conflict. That is a fact. Right? Would you accept that? So it is not what I say to be true, but the fact itself. Fact themselves show what the truth is. As we talked the other day about relationship: as long as there is this separation between two human beings. . . . psychologically, there must be conflict. That is a fact. It is not what I say – how do I know what I say is true but it is a fact that as long as I am ambitious and pursuing my particular form of pleasure, particular fulfillment and my wife or husband does, or girl friend does the same, we must inevitably end up in conflict. That is a fact. So it is not, how do I know what truth is. First of all let us look at facts. We are greatly prejudiced people. We have great many prejudices. We have cultivated them, strengthened them by public opinion and so on that our prejudices prevent understanding other people. Right? That is a fact. So can one be free of prejudices, free of certain opinions which become so very strong in our lives. And the question then arises: how is it possible for human beings to be free of prejudices? That we can discuss. That we can have conversation, a dialogue and say, look I have prejudices suppose I have them, and you have them, and so these prejudice whether

पहला प्रश्न है आपको कैसे मालूम कि जो आप कह रहे हैं वह सच है?

आप मुझसे यह सवाल क्यों कर रहे हैं? क्या यह सच नहीं है कि जब तक राष्ट्रीय, आर्थिक, प्रजातीय और धार्मिक विभाजन हैं, द्वंद्व का होना तय है। यह एक तथ्य है। ठीक? क्या आप इससे सहमत हैं? यह सच इसलिए नहीं कि मैं कह रहा हूँ, बल्कि यह अपने में ही एक तथ्य है। तथ्य स्वयं ही सच्चाई बयान करते हैं। जैसे कि हमने हाल में संबंध के बारे में कहा कि जब तक दो इंसानों के बीच मानसिक स्तर पर भेद है, द्वंद्व का होना स्वाभाविक है। यह एक हकीकत है। बात मेरे कहने की नहीं है, मुझे कैसे मालूम कि मैं जो कह रहा हूँ वह सही है, पर यह एक सच्चाई है कि जब तक मैं महत्वाकांक्षी हूँ, अपने सुख के पीछे भाग रहा हूँ, अपनी तुष्टि पाने में लगा हूँ और मेरी पत्नी, मेरा पति या मेरी महिला दोस्त भी यही करने में लगे हैं, तो हम द्वंद्व से बच नहीं सकते। यह तथ्य है। बात यह नहीं है कि मुझे कैसे मालूम कि सच्चाई क्या है। सबसे पहले तथ्यों को देखें। हम लोग पूर्वाग्रह से खासे ग्रस्त हैं। हम ढेरों पूर्वाग्रहों को ढोए रहते हैं, उन्हें पोषित करते हैं, आम राय बनाकर उन्हें मज़बूत करते हैं और इस प्रकार औरों को समझने में हमारे पूर्वाग्रह बाधा बनते हैं। ठीक? यह एक सच्चाई है। अब पूर्वाग्रहों से, मतों से, खास विचारों से जिन्होंने हमारी जिंदगी में गहरी पैठ बना ली है मुक्त होना क्या संभव है? अब सवाल उठता है कि पूर्वाग्रहों से कैसे आज़ाद हुआ जाए? इस पर हम चर्चा कर सकते हैं। इस बारे में बातचीत हो सकती है, संवाद हो सकता है, कि देखिए मेरे अपने पूर्वाग्रह हैं, आपके अपने, ऐसा मानकर चलते हैं, और ये पूर्वाग्रह चाहे वे

they are idealistic prejudices, capitalist prejudices, totalitarian prejudices, religious prejudices, they divide people. Right? This is a simple fact. And where there is division there must be conflict. . . the Arabs and the Jew, the Islamic world and the rest of the world. Those who are terribly bigoted and those who are not, must be in conflict. It is a fact. I have nothing to do with it. It isn't how do I know what I am saying is true, we are just facing fact. Now what is a fact? What do you think is a fact? That which has happened before, an incident, a car accident, this is a fact. Or what is happening now, sitting here, is a fact. But what will happen in the future may not be a fact. So fact implies that which has happened before: yesterday, walking along the lane, I met a viper, I saw it, it didn't bite me. That is fact. And what is happening now, what I am thinking, what I am doing now, is a fact. And what I will do may not be a fact. It might happen, or might not happen. So if we are clear on what is a fact, and then what is an idea? You understand? Is an idea a fact? And the word 'Idea', the Greek and son on, Latin, means to observe. The root meaning of that word "idea" is to observe, to perceive, to see. What we do is see a fact and make an abstraction of it and then pursue the idea. Which means there is always the fact and a conclusion from the fact. . . and pursue the fact, pursue the conclusion, not the understanding of the fact. Am I making myself clear? So please, it is not how do you know what you are saying is true. . . the speaker is

आदर्शवादी हों, पूंजीवादी हों, सर्वाधिकारवादी हों या धार्मिक, वे सब लोगों को बांटते हैं। ठीक है न? यह एक सीधी सी बात है। जहां विभाजन है वहां द्वंद्व होगा ही : जैसे कि अरब और यहूदी, इस्लाम और बाकी दुनिया; ऐसे लोग जो बेहद संकीर्ण, मतांध हैं और जो नहीं हैं, उनके बीच तो लड़ाई होनी ही है। यह कोई निजी राय नहीं बल्कि एक सच्चाई है। सवाल यह नहीं है कि मैं कैसे जानता हूं कि मैं जो कह रहा हूं वह सच है, बल्कि हम तो केवल तथ्य को देख रहे हैं। अब देखना यह है कि तथ्य क्या है? आपको क्या लगता है, तथ्य होता क्या है? एक घटना जो पहले घट चुकी है, कोई कार एक्सीडेंट, वह एक तथ्य है। या फिर यहां बैठे हुए, अभी क्या हो रहा है, यही तथ्य है, हकीकत है। लेकिन भविष्य में जो होगा वह तथ्य नहीं हो सकता है। तो, तथ्य का मतलब है जो बीत चुका है : कल सड़क पर चलते हुए एक सांप दिखाई दिया पर उसने मुझे काटा नहीं। यह एक हकीकत है। और जो अभी हो रहा है, मैं जो कुछ सोच रहा हूं, कर रहा हूं, वह हकीकत है। और मैं जो करूंगा वह हकीकत नहीं भी हो सकता है। वह घट भी सकता है और नहीं भी। तो अगर हम तथ्य के बारे में स्पष्ट हैं, तब फिर विचार क्या है? आप समझ रहे हैं? क्या विचार तथ्य है? ग्रीक या लैटिन भाषा में 'आयडिया' यानी विचार शब्द का अर्थ होता है 'देखना'। इस शब्द का मूल अर्थ है देखना, महसूस करना, अवलोकन करना। हम एक तथ्य को देखते हैं, उसके बारे में कल्पना करते हैं, और उस विचार या कल्पना को मानकर चलते हैं। इसका अर्थ है कि तथ्य हमेशा मौजूद रहता है लेकिन उस तथ्य से हम कोई निष्कर्ष निकाल लेते हैं। तथ्य को समझने के बजाय हम उस तथ्य और उससे निकाले गये निष्कर्ष को मान कर बैठ जाते

merely pointing out facts. Those facts are not personal. If I say I am a Hindu and I stick to it, that is a fact. Whether it is an illusion, whether it is some kind of superstitious sentimental nonsense, that also is fact. You understand? Fact can be an illusion, or actual. But most of us live with illusions.

I am an Indian, that is an illusion. And you are, if I may most gently point out you are British – that is also an illusion. This tribal insular worship is destroying the world. That is a fact. As long as I am an Arab and you are something else, I am going to destroy you because I believe by destroying you I will go to heaven. Right? That is an illusion which they have accepted as a fact and for this illusion they are willing to fight and kill, and destroy. Right? So can we always deal with facts? I am asking: can we always be with facts? Not translate the facts according to my prejudice, according to my belief, according to my neurotic illusions, however noble they are . . . can I look at these facts and understand what those facts are saying? Suppose I had an accident in a car. Can I look at the fact that I was rather careless, driving too fast, not paying complete attention to what I was doing . . . because I

हैं। क्या मैं स्पष्ट कर पा रहा हूँ? इसलिए बात यह नहीं है कि मुझे कैसे मालूम कि मैं जो कह रहा हूँ वह सच है या नहीं... वक्ता तो तथ्य की ओर केवल संकेत कर रहा है। ये तथ्य व्यक्तिगत कतई नहीं हैं। अगर मैं अपने को हिंदू कहता हूँ और इस पर कायम रहता हूँ, तो यह एक तथ्य है। चाहे यह एक भ्रम हो, या किसी तरह के अंधविश्वास पर आधारित भावुकतापूर्ण बकवास, वह सब तथ्य है। आप यह समझ पा रहे हैं? तथ्य एक भ्रम भी हो सकता है और हकीकत भी। लेकिन हममें से ज्यादातर भ्रम के साथ जीते हैं।

मैं भारतीय हूँ जो कि एक भ्रांति है। और मैं अगर बहुत ही विनम्रतापूर्वक कह सकूँ, आप ब्रिटिश हैं – तो, यह भी एक भ्रांति है। अलगाव और विभाजन पर आधारित यह देशभक्ति पूरी दुनिया को तबाह कर रही है। यह हकीकत है। जब तक मैं अपने को अरब माने हूँ और आप अपने को कुछ और तो मैं आपके विनाश के लिए तैयार रहूँगा क्योंकि मैं इस विश्वास से बंधा हूँ कि आपको खत्म कर देने पर मुझे स्वर्ग मिलेगा। ठीक है? यह भ्रांति है जिसे उन्होंने तथ्य माना हुआ है और इस भ्रांति के वास्ते वे मरने और मारने को तैयार हैं। इसलिए क्या हम तथ्य के साथ हमेशा बने रह सकते हैं? मेरा प्रश्न है : क्या हम सदा तथ्य के साथ रह सकते हैं, न कि अपने पूर्वाग्रहों, विश्वासों, और बेसिरपैर की भ्रांतियों के अनुसार उनको बदलते जाना, उनकी व्याख्या करते जाना, भले ही वे भ्रांतियाँ कितनी ही महान क्यों न हों...? क्या मैं इन तथ्यों का अवलोकन कर सकता हूँ और यह समझ सकता हूँ कि ये क्या कह रहे हैं? फर्ज कीजिए मेरे साथ कार दुर्घटना होती है। क्या मैं इस तथ्य को देख सकता हूँ कि शायद मैं कुछ ज़्यादा लापरवाह हो गया था, काफी तेज़

was talking to my friend next to me – that is a fact. But I then say ‘No, it is your fault’ – you know, ‘the other fellow is a fool!’ Now, it is a fact that we have ideals. Right? Don’t you all have ideals? No? I wish we could have a dialogue, friendly, talk to each other. Don’t you have ideals? I am afraid you do have ideals. What are those ideals? Are they fact? The ideal that we must live peacefully. Right? The ideal that we must be – whatever it is, non-violent. . . or the ideals of a communist, which are drawn from historical study, but those studies are prejudiced by my conditioning. So why do we have ideals at all? I know this is a dangerous thing to say because most of us live with these extraordinary ideals. We’re questioning, please I’m not saying you should or should not have ideals. I am saying, why do we have ideals, faith, beliefs, as a Christian, as a Buddhist, as a Hindu, I am an American. . . you are a British, you know all the rest of it – why? Is it our brain is incapable of living without any illusion? What do you say to that? Is my brain capable, strong, vital. . . to understand things as they are and not create a future ideal? Ideal is non-existent. Right? All Christians and all religious people believe that you must not kill. Right? And probably the Christian have killed more than anybody else. Right? And the British. And the Islamic world have killed more – no, not so may as the Christians. And

रफ्तार से गाड़ी चला रहा था, मैं जो कर रहा था उसमें मेरा पूरा ध्यान नहीं था... क्योंकि मैं बगल में बैठे अपने दोस्त से बात करने में लगा हुआ था – यह एक तथ्य है। पर मैं यह कहने लगता हूँ, ‘यह उसकी ग़लती है’, आपको तो मालूम ही है, हमेशा ‘दूसरा ही बेवकूफ़ होता है।’ अब यह हकीकत है कि हम आदर्शों से घिरे हैं। सही है? क्या आप सबके अपने-अपने आदर्श नहीं हैं? नहीं? काश हमारे बीच संवाद हो पाता, दोस्त की तरह हम बातचीत कर पाते। क्या आपके अपने आदर्श नहीं हैं? मुझे लगता है ज़रूर होंगे। वे कौन से आदर्श हैं? क्या वे हकीकत हैं? यह आदर्श कि हमें शांतिपूर्वक जीना है। ठीक है? यह आदर्श कि हमें अहिंसक होना है। या साम्यवादी आदर्श जिन्हें ऐतिहासिक अध्ययनों से खोज निकाला गया है पर वे अध्ययन मेरे संस्कारों से ग्रसित हैं। अब, हमारे पास आदर्श होते ही क्यों हैं? मुझे पता है यह कहना खतरनाक है क्योंकि हममें से ज्यादातर लोग शानदार आदर्शों के साथ जीते हैं। हम इस पर सवाल उठा रहे हैं, मैं यह नहीं कह रहा कि आपके आदर्श होने चाहिए या नहीं होने चाहिए। मैं कह रहा हूँ कि हमारे पास आदर्श, आस्था, मान्यताएं क्यों होती हैं, एक ईसाई, बौद्ध या एक अमेरिकी या ब्रिटिश होने के नाते। क्यों? क्या ऐसा है कि हमारे मस्तिष्क भ्रांति के बगैर जी ही नहीं सकते? इस बारे में आपका क्या कहना है? क्या मेरा मस्तिष्क सक्षम है, स्वस्थ है, जीवंत है, चीज़ें जैसी हैं उनको वैसा समझ पाने के लिए, न कि भविष्य के आदर्श खड़े करने के लिए? आदर्श का कोई अस्तित्व ही नहीं है। ठीक? शायद ईसाई और बाकी सभी धर्म यह मानते हैं कि हमें किसी के प्राण नहीं लेने चाहिए। जबकि शायद ईसाइयों ने बाकी सभी धर्मों से ज़्यादा लोगों की जानें ली हैं। ठीक

probably the Buddhist and the Hindus come much on a lower scale because they are barbarians, they are uncivilized people. And so it goes on. And do we know that ideals of every kind, faith, belief, divide people? That is a fact. So, can we be free of ideals, of faith, of being identified with one group and against another group which identifies with another group? You follow? Be free of all this. Could we? Or is it impossible? If we could have a dialogue about this then we would exchange. . . yes, it is possible, it is not possible, why is it not possible. . . you understand? Could we do that now. . . To have a free mind, free brain that is not cluttered up with a lot of rubbish, a lot of illusions. Is that possible? And some of you may say, no it is not possible because I can't live without my beliefs. I must have my ideals, my faith, otherwise I am lost. . . with your faiths, with your beliefs, ideals you are already lost. That is a fact. You are very lost people. But whereas if we could have a dialogue, conversation, and say why do I cling to my particular prejudice, particular ideal, and so on. . . why have I identified myself with them? Why do I identify myself with anything? You follow? Push it. Push it deeply to find out why we do all these things. Why we have allowed ourselves to be programmed. Why we are afraid of public opinion and so on and so on. So the question: how do you know what you are saying is

है? और ब्रिटिश लोगों ने भी। इस्लामी दुनिया ने भी लोगों की जानें ली हैं - लेकिन उतना नहीं जितना ईसाइयों ने। जबकि बौद्ध और हिंदुओं ने शायद सबसे कम जानें लीं हैं क्योंकि वे असभ्य और गंवार थे। इस तरह यह चलता आ रहा है। और क्या हमें इस बात का एहसास है कि किसी भी तरह का आदर्श, विश्वास और आस्था मानव को आपस में बांटते हैं? यह एक तथ्य है। तो क्या हम आदर्शों और विश्वासों से, और किसी एक समूह के साथ पहचान बनाने और किसी दूसरे के खिलाफ होने से, जो किसी और के साथ अपनी पहचान बनाए है, स्वतंत्र हो सकते हैं? आप समझ रहे हैं न? इस सबसे मुक्त होइये। क्या ऐसा किया जा सकता है? या यह नामुमकिन है? यदि हम इस बारे में संवाद कर सकें तब हम कुछ आपस में तय कर सकेंगे कि यह संभव है, या यह संभव नहीं है, या फिर यह क्यों संभव नहीं है... समझ रहे हैं न आप? क्या अभी हम यह कर सकते हैं? एक स्वतंत्र मन और स्वतंत्र मस्तिष्क का होना जो कूड़े-कचरे और तमाम तरह की भ्रांतियों से भरा न हो। क्या ऐसा संभव है? आपमें से कुछ लोग ऐसा कह सकते हैं कि यह संभव नहीं है क्योंकि मैं अपनी मान्यताओं के बिना जी ही नहीं सकता। मेरे आदर्श, मेरे विश्वास तो होने ही चाहिए नहीं तो मैं कहीं का नहीं रहूंगा, मेरा कोई वजूद ही नहीं होगा... वैसे भी आप अपने आदर्शों, विश्वासों और मान्यताओं में अपना वजूद पहले ही खो चुके हैं। यह एक तथ्य है। आप बुरी तरह खो चुके हैं। लेकिन अगर हम आपस में संवाद कर सकें, बातचीत कर सकें और ऐसा कह सकें कि मैं क्यों अपने पूर्वाग्रहों, आदर्शों इत्यादि से चिपका हूं.. . क्यों मैं किसी भी चीज़ से अपनी पहचान बनाना चाहता हूं? समझ रहे हैं न आप? इस

true? I am afraid it has very little meaning. Truth is not something that is mysterious, truth is where you are. From there we can begin. Truth is I am angry, I am jealous, I am aggressive, I quarrel. That is a fact. So one must begin, if one may most respectfully point out, where one is. That is why it is important to know oneself – to have complete knowledge of one self, not from others, not from psychologists, brain specialists and so on, but to know what you are. Because you are the story of mankind. Do you understand all this? If you know how to read that book which is yourself then you know all the activities and the brutalities and the stupidities of mankind because you are the rest of the world. Right? Is that question clear.

पर विचार कीजिए। गहराई से पता लगाइये कि क्यों हम यह सब करते हैं। हमने क्यों खुद को एक ढांचे में ढलने दिया है। क्यों हम 'लोग क्या सोचेंगे' इस बात से डरते हैं। तो, प्रश्न है कि आप कैसे जानते हैं कि आप जो कह रहे हैं वह सत्य है? मुझे तो लगता है इसका बहुत ही कम महत्व है। सत्य कोई रहस्यमयी वस्तु नहीं है, आप जहां पर खड़े हैं सत्य वहीं है। वहां से हम शुरुआत कर सकते हैं। सत्य यह है कि मैं क्रोधी हूं, ईर्ष्यालु हूं, आक्रामक हूं, झगड़ालू हूं। यह हकीकत है। इसलिए मैं बड़ी विनम्रतापूर्वक कहूंगा कि आप वहीं से शुरुआत करें जहां आप खड़े हैं। यही वजह है कि स्वयं को जानना इतना ज़रूरी है – स्वयं के बारे में पूरी जानकारी होना, दूसरों से ली गयी जानकारी नहीं, मनोवैज्ञानिकों और मस्तिष्क विशेषज्ञों से ली गयी जानकारी नहीं, बल्कि स्वयं ही यह समझना कि हम क्या हैं। क्योंकि आप ही मनुष्यजाति की कहानी हैं। यह सब आप समझ रहे हैं न? अगर आप उस पुस्तक को जो कि आप स्वयं हैं पढ़ना जान जाते हैं तो आप मानवजाति के समस्त क्रियाकलापों को, उसकी बर्बरताओं और मूर्खताओं को जान लेंगे क्योंकि आप ही पूरा संसार हैं। ठीक है न? क्या प्रश्न स्पष्ट हो पाया।